भारतीय रेल की जनरल बोगी

भारतीय रेल की जनरल बोगी
पता नहीं आपने भोगी के नहीं भोगी।
एक दिन प्लेटफार्म पर देखकर सवारियों की मात्रा
हमारे पसीने छूटने लगे
हम झोला उठाकर घर की तरफ लौटने लगे।

इतने में ही एक कुली आया
और मुस्कुराकर बोला-गाड़ी के अन्दर जाओगे।
हमने कहा तुम पहुँचाओगे
बोला बड़े-बड़े पार्सल पहुँचाए हैं
आपको भी पहूंचा दूंगा
पर रुपये पूरे पचास लूंगा।
हमने कहा पचास रुपैया !
वो बोला हां भैया
दो रूपये आपके, बाकी सामान के।
हमने कहा सामान नहीं है अकेले हम हैं
वो बोला बाबूजी आप किस सामान से कम हैं
भीड़ देख रहे हैं कन्धे पर उठाना पड़ेगा
धक्का देकर अन्दर पहुँचाना पड़ेगा।
मन्जूर हो तो बताओ
हमने कहा देखा जाएगा तुम उठाओ।
कुली ने बजरंग बली का नारा लगाया
पूरी ताकत लगाके जैसे ही हमें उठाया
कि खुद बैठ गया।
दूसरी बार कोशिश की तो लेट गया
बोला बाबूजी, भगवान ही आपको उठा सकता है।
हम क्या खाकर उठाएंगे
आपको उठाते-उठाते खुद दुनिया से उठ जाएंगे।

इतने में ही गाड़ी ने सीटी दे दी
हम झोला उठाकर धाए
किसी तरह से डिब्बे के अन्दर घुस पाए।
डिब्बे के अन्दर का दृश्य बड़ा घमासान था
पूरा डिब्बा अपने आप में हल्दी घाटी का मैदान था।
लोग खड़े थे, बैठे थे, लेटे थे
जिन्हें कहीं जगह नहीं मिली वो बर्थ के नीचे पड़े थे।

संकलनकर्ता : मनमोहन कुमार गोयल, वैज्ञानिक 'ब'
साभार : डा० प्रदीप चौबे

हमने एक गंजे यात्री से कहा कि
थोड़ी सी सीट हमारे लिए भी बनाइये
वो बोला, आइये हमारी खोपड़ी पर बैठ जाइये।
आप ही के लिए साफ की है
केवल दो रूपये देना
लेकिन फिसल जाओ तो मत कहना।
इतने में एक भरा हुआ बोरा खिड़की के रास्ते चढ़ा
आगे बढ़ा और गंजे के सिर पर गिर पड़ा।
गंजा चिल्लाया किसका बोरा है
बोरा फौरन खड़ा हो गया
और उसमें से एक लड़का निकलके बोला
कि अकेला बोरा नहीं है
बोरे के अन्दर बारह साल का छोरा है।
अन्दर आने का यही एक तरीका है
हमने अपने मां-बाप से सीखा है
आप तो एक बोरे में ही घबरा रहे हैं
जरा ठहर तो जाओ
अभी गद्दे में लिपटके हमारे बाप जी अन्दर आ रहे हैं।
उनको आप कैसे समझाएंगे
हम तो खड़े भी हैं
वो तो आपकी गोद में ही लेट जाएंगे।

इतने में ही गाड़ी में हुआ हल्का उजाला
किसी ने जुमला उछाला कि किसने बीड़ी जलाई है
कोई बोला स्वागत करो डिब्बे में पहली बार बिजली आयी है।
एक ने पूछा पंखे कहां हैं?
दूसरे ने कहा जहां नहीं होने चाहिए वहां हैं।
पंखों पर आपको क्या आपत्ति है
जानते नहीं रेल हमारी राष्ट्रीय सम्पत्ति है।
कोई राष्ट्रीय चोर हमें घस्सा दे गया है
सम्पत्ति में से अपना हिस्सा ले गया है
आपको लेना हो तो आप भी ले जाओ
मगर जेब में जो बल्ब रख लिए हैं
उनमें से एक-आध तो हमको दे जाओ।

एक सज्जन फर्श पर बैठे हुए थे आंखें मूंदे
उनके सिर पर अचानक गिरी पानी की गर्म-२ बूंदें
वे चिल्लाकर बोले हे! पानी गिराता कौन है
देखते नहीं नीचे तुम्हारा बाप बैठा है

ऊपर से आवाज आई क्षमा करना भाई पानी नहीं है
दरसल हमारा छः महीने का बच्चा लेटा है।
कृपया माफ कर दीजिए
और अपना सर भी जरा अलग कर लीजिए
वरना बच्चे का क्या भरोसा
और न जाने अगले ही क्षण
उसने आपको क्या परोसा।

इतने में ही एक सज्जन दहाड़े मारकर चिल्लाए
कि पकड़ो, पकड़ो, जाने न पाए
किसी ने पूछा क्या हुआ, क्या हुआ !
वे सज्जन बोले हाय! हाय! मेरा बटुआ
किसी ने भीड़ में मार लिया
पूरे तीन सौ रूपये से उतार दिया
टिकट भी उसी में था।
पड़ोसी बोला रहने दो बेटा, भूमिका मत बनाओ
टिकट न लिया हो तो हाथ मिलाओ
हमने भी नहीं लिया है।
एक तो विदाऊट टिकट जा रहे हो
ऊपर से सारी दुनिया को चोट्टा बता रहे हो।
वे सज्जन बोले नही, नहीं भाई साहब !
मैं झूठ नहीं बोलता
मैं इस देश का एक टीचर हूं।
कोई बोला यही तो झूठ है
टीचर के पास और बटुआ !
इससे अच्छा मजाक तो इतिहास में आज तक नहीं हुआ
टीचर बोला कैसा इतिहास, मेरा विषय भूगोल है
तभी एक स्टूडेंट बोला कि इसीलिए आपका बटुआ गोल है।

इतने में ही गाड़ी बड़े जोर से हिली
एक सज्जन खुशी से चिल्लाया
कि अरे ! चली, चली !
दूसरा बोला जय बजरंग बली
तीसरा बोला या अली !
हमने कहा काहे के अली और काहे के बली
गाड़ी तो बगल वाली जा रही है
और तुमको अपनी चलती नजर आ रही है।
प्यारे! सब नजर का धोखा है।
दरसल यह रेलगाड़ी नहीं हमारी जिन्दगी है
और जिन्दगी में धोखे के अलावा क्या होता
जिन्दगी में धोखे के अलावा कुछ नहीं होता।